प्रार्थना

शब्दार्थ

विपत्ति—कष्ट

त्राण—रक्षा

विपदा—संकट

निर्भीक—निडर

व्यथित—दुखी

नवाकर—झुकाकर

आराधूँ—पूजा या आराधना करूँ

करुणाकर—दया करने वाला

संशय—संदेह

1. **निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों को कविता में प्रयुक्त उचित शब्द द्वारा पूरा कीजिए–**

पार उतर जाऊँ अपने बलु, इतना हे करतार करो!

नहीं माँगता हाथ बँटाओ, मेरे सिर का बोझ घटाओ!

आप बोझ अपना सँभाल लूँ, ऐसा बल संचार करो।

विपदा में निर्भीक रहूँ मैं, इतना हे भगवान, करो!

सुख के दिन में शीश नवाकर, तुमको आराधूँ करुणाकर,

औ विपत्ति के अंधकार में, जगत हँसे जब मुझे रुलाकर,

तुम पर करने लगूँ न संशय, यह विनीत स्वीकार करो।

2. **निम्नलिखित भाव प्रकट करने वाली पंक्तियों को कविता में रेखांकित कीजिए–**

क. हे प्रभु! मुझे इतनी हिम्मत दो कि मैं अपने दुखों और कष्टों पर विजय प्राप्त कर लूँ।

ख. इतनी शक्ति भर दो कि मैं किसी पर बोझ न बनूँ अर्थात अपने आपको सँभालूँ।

नहीं माँगता दुख हटाओ, **व्यथित** हृदय का ताप मिटाओ,

दुखों को मैं आप जीत लूँ, ऐसी शक्ति प्रदान करो।

विपदा में निर्भीक रहूँ मैं, इतना हे भगवान करो!

कोई जब न मदद को आए, मेरी हिम्मत टूट न जाए,

नहीं माँगता हाथ बँटाओ, मेरे सिर का बोझ घटाओ!

आप बोझ अपना सँभाल लूँ, ऐसा बल संचार करो।

भाषा से

श्रुतलेख– विपत्ति, निर्भीक, व्यथित, आराधूँ, करुणाकर, संशय।

1. उचित विलोम शब्द लिखिए–

निर्भीक × भीरु	स्वीकार × बहिष्कार	दुख × सुख
अंधकार × उजाला	जीवन × मृत्यु	हार × जीत

2. दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए–

विपत्ति —	संकट	आफत
शक्ति —	बल	ताकत
प्रभु —	ईश्वर	भगवान
निर्भीक —	अद्भूत	आशंकाहीन
करुणा —	दया	कृपा
संशय —	शंका	शक

3. निम्नलिखित शब्दों का वर्ण-विच्छेद कीजिए–

त्राण = त् + र् + आ + ण् + अ

निर्भीक = न् + इ + र् + भ् + ई + क् + अ

विधान = व + इ + ध + आ + न् + अ

संशय = स + न् + श् + अ + य् + अ

पाठ-1 प्रार्थना

Date....................

लघु उत्तरीय प्रश्न

1.) कवि भगवान से ऐसा बल संचार करने की प्रार्थना कर रहा है जिससे वह अपना बोझ स्वयं संभाल सके।

2.) सुख के दिनों मे कवि भगवान की अराधना करना चाहता है।

3.) कवि भगवान से ऐसी शक्ति प्राप्त करना चाहता है जिससे वह स्वयं ही दुखो पर विजय प्राप्त कर ले।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1.) जब कवि विपत्तियों के अंधकार में फंसा हो तथा संसार उसे छलकर स्वयं खुश हो रहा हो, ऐसे समय पर वह ईश्वर पर संशय नहीं करना चाहता।

2.) 'पार उतर जाऊं अपने बल' से कवि का तात्पर्य यह है कि ईश्वर उसकी जीवन नैया पार करने में सहायता न दे अपितु उसे इतनी शक्ति दे कि वह अपने बल से जीवन में आने वाली बाधाओं पर विजय प्राप्त कर अपनी जीवन नैया स्वयं पार कर सके।

Date.........................

4·) कवि ईश्वर से विपत्ति मे बचाने , दुख हटाने , जीवन नैया पार करने आदि की माँग नहीं कर रहा है।

5·) प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कह रहा है कि वह अपने सुख के समय में ईश्वर को नमन कर उसकी आराधना करना चाहता है। कवि कहता है कि जब दुख के समय में पूरी दुनिया उसे छल रही हो उस पर उंगली उठा रही हो तो ऐसा न हो कि वह उस पर संदेह करने लगे। इसलिए वह ईश्वर से प्रार्थना करता है कि उसे ऐसी शक्ति प्रदान करे कि वह निर्भीक बना रहे।